Volume-4, Issue-11, Nov-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Literature

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : एक परिचय

Sushil kumar हिन्दी विभाग एस.डी कॉलेज, बरनाला के.सी रोड़, बरनाला (पंजाब)148101

Key words :

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में जिन महान् साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' उनमें विशिष्ट हैं| उनके निराले व क्रांतिकारी व्यक्तित्व में अतीत के प्रति आस्था, प्राचीन शाश्वत मूल्यों के प्रति समर्पण, स्वतंत्र छंद विधान, शब्द सौंदर्य का वैभव, नवीन अर्थ भंगिमा, नवीन प्रतीकों की उद्भावना, शोषण का विरोध, शोषित के प्रति ,शोषक के प्रति घृणा व नवजागरण का स्वरमिलता है| उनके अपने शब्दों में - "देखते नहीं, मेरे पास एक कवि की वाणी, कलाकार के हाथ, पहलवान की छाती और फिलासफर के पैर हैं|"

निराला का जन्म महिषादल स्टेट मेदनीपुर, बंगाल में सन् 1898 के विक्रमीय वसंत पंचमी के दिन हुआ था| इनका घर उन्नाव जिले में गढाकोला गाँव में था | इनके पिता पं.रामसहाय महिषादल स्टेट में नौकरी करते थे और वहीं बस गए थे| निराला अपने माता- पिता के इकलौते पुत्र थे| निराला आठ वर्ष के ही बंगाली में कविता लिखने लगे थे| अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक हरिपद घोषाद इनकी प्रतिभा के बहुत प्रशंसक थे| इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ| अपनी पत्नी से ही इन्होंने हिन्दी सिखी| जिस के लिए वह 'गीतिका' में अपनी पत्नी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए लिखते हैं- " जिसकी हिन्दी के प्रकाश, प्रथम परिचय से मैं आंखें नहीं मिला सका, लजाकर हिन्दी की शिक्षा से संकल्प से.....हिन्दी सीखी थी,.... उस सुदशिक्षणा स्वर्गीया प्रिया श्रीमती मनोहरा देवी को सादर|" महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित 'सरस्वती' की प्रतियां लेकर इन्होंने हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और हिन्दी रचना आरम्भ की| इनका जीवन संघर्षों की कहानी है| जब यह बाईस वर्ष के थे इनकी पत्नी का देहांत हो गया| पुत्री सरोज की मृत्यु ने तो इन्हें भीतर तक तोड़ दिया| 'सरोज समृति' नामक शोक गीत की रचना इन्होंने पुत्री सरोज की याद में ही की| इन्होंने स्वयं कहा-

" दुःख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं रही|"

राम की शक्तिपूजा में राम के माध्यम आपना ही जीवन संघर्ष व्यक्त करते हुए प्रतीत होते हैं-

'धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!'

निराला ने कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, संपादक व अनुवादक के रूप में हिन्दी सेवा की| उनकी रचित व अनुदित कृतियों की संख्या 61 है| उन्होंने अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अपरा, जूही की कली, राम की शक्तिपूजा आदि काव्य संग्रह ; अलका, अप्सरा, निरूपमा, प्रभावती, चोटी की पकड़, काले कारनामे आदि उपन्यासों ; लिली, सखी, सुकुल की बीबी, चतुरी चमार आदि कहानी संग्रहों तथा कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा आदि रेखा चित्रों की रचना से हिन्दी साहित्य से समृद्ध किया| इसके अतिरिक्त रविन्द्र कविता कानन, पंत और पल्लव, चाबुक, हिन्दी बंगला का तुलनात्मक व्याकरण, रस-अलंकार, रामचरितमानस की टीका आदि समीक्षा ग्रंथ ; भक्त ध्रुव, भक्त प्रहलाद, भीम, भारत में विवेकानंद, श्रीरामकृष्ण वचनाममृत आदि की जीवनियां भी लिखीं| निराला की काव्य यात्रा का आरम्भ छायावाद से माना जाता है| यह छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भों प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा में से एक थे| कुछ विद्वान छायावादी काव्यधारा का आरंभ ही इनकी कविता 'जूही की कली' से मानते हैं| 'जूही की कली' एक मुक्तक छंद गीत है जिसमें प्रकृति का मानवीकरण किया गया है और उसके माध्यम से नायक नायिका की प्रणयानुभूति को अभिव्यक्ति दीगई है|

"विजन वन वल्लरी पर सोती थी सुहागभरी स्नेह-स्वप्न-मग्न?

अमल कोमल तनु तरूणी जुही की कली, दृग बंद किए, शिथिल पत्रांक में वासंती निशा थी|"

हिन्दी के कुछ विद्वान उनके कवि जीवन का आरम्भ सन् 1920 में लिखी उनकी कविता ' जन्मभूमि की वंदना' से मानते हैं| इनके आरम्भिक काव्य में वैयक्तिकता, जिज्ञासा, प्रकृति का मानवीकरण, नारी सौंदर्य का प्रकृति के उपमानों से वर्णन तथा सामाजिक चेतना का नवीन प्रतीक विधानों के माध्यम से निरूपण जैसी विशेषताएं देखने को मिलती हैं| इनका विचार था-

"बहने दो रोक टोक से कभी नहीं रूकती है,

यौवन मद की बाढ नदी की कहो कभी झुकती है?"

कविता में पारम्परिक छंद का आग्रह इन्हें स्वीकार नहीं था| मुक्तक छंद के माध्यम से ही इन्होंने अपने युग की सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक परिवर्तन लहर का प्रतिनिधित्व किया| उनके अनुसार –

"मुक्त छंद, सहज प्रकाशन वह मन का,

निज भावों का प्रकट अकृत्रिम चित्र|"

यह वह युग था जब देश स्वतंत्रा प्राप्ति की नवआभा को देखने के लिए संघर्षरत था| देश में भारतीय नवजागरण की नवचेतना विकसित हो रही थी| तत्कालीन साहित्य में नवजागरण की यह गूंज सूनाई पड़नी स्वाभाविक थी| अंग्रेजों के आगमन से पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, राजा राममोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद आदि नवजागरण के अग्रदूतों के सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक दर्शन, समाज-सुधार आदि का प्रभाव युगीन साहित्यकारों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है| निराला की रचनाओं में भी इनका प्रभाव देखने को मिलता है| निराला के स्वाभाव में कबीर सा फक्कड़पन, विद्रोह व कुरुतियों का घोर विरोध मिलता है| 'कुल्ली भाट' में हास्य व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया गया है| उनकी रचना 'बिल्लेसर बकरिहा' भी एक व्यंग्यात्मक हास्य है| 'कुकुरमुत्ता' में वह गुलाब के माध्यम से सामंती व पूंजीवादी व्यवस्था पर चोट करते कहते हैं-

"अबे सुन बे गुलाब,

भूल मत जो पायी खुशबू रंगों आब

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट"

'राम की शक्तिपूजा' में निराला राम को एक साधारण मानव के रूप स्थापित कर उसके माध्यम से अपने समय की मुख्य चिंता "शक्ति का संयोजन" को केन्द्र में रखते हैं| जब जाम्बवान राम को परामर्श देते हैं-

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,

छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनंदन!"

शक्ति की यही मौलिक कल्पना उस समय के पराधीन भारत की मूल समस्या थी जिसे निराला कहीं ओर न ढूंढकर भीतर से ही जागृत करने का संकेत 'राम की शक्तिपूजा' के अंत में देते हैं-

'होगी जय,होगी जय,हे पुरुषोत्तम नवीन!'

कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन|

निराला अपनी काव्य भाषा से पाठक के समक्ष बिम्ब उपस्थित कर देने में सक्ष्म थे| 'भिक्षुक' कविता का एक काव्यात्मक बिम्ब दृष्टव्य है-

'साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये

बायें से वे मलते हुए पेट को चलते और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाये भूख से सूख ओंठ जब जाते दाता भाग्य विधाता से क्या पाते?

निराला यद्यपि प्राचीन संस्कृति के समर्थक थे तथापि नवीनता को मुक्त हृदय से स्वीकारने में भी तत्पर रहते थे| वस्तुत: प्राचीन संस्कृति के नाम पर फैले पाखंड और विकृतियों को त्यागकर इन्होंने शाश्वत मूल्यों के नये भावबोध व कथ्य के साथ प्रस्तुत किया|

"आँखों में नव जीवन का तू अंजन लगा पुनीत"

के माध्यम से इन्होंने नवगीत, नव लय, ताल, छंद की नवाभिव्यक्ति की| निराला की सरस्वती वंदना ' वर दे वीणा वादिनि वर दे' में उनके काव्यादर्श का मूल मिलता है| निराला की कविताओं में प्रवाह, लयात्मकता, संगीतात्मकता, विद्यमान है| उनकी रचनाओं में तुकांतता का एक उदाहरण देखिए –

"स्नेह निर्झर बह गया है, रेत ज्यों तन रह गया है, आम की डाल जो सूखी दिखी, कह रही है-

अब यहाँ पिक या शिकी, नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी, नहीं जिसका अर्थ- जीवन दह गया है|"

अंतत: हम कह सकते हैं कि छंद,भाषा-शैली तथा नवीन भाव बोध संबंधी जितनी विविधता निराला में है वे उन्हें हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है|